بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्सिहिल अज़ीज़ दिनांक 07.10.16 स्थान कैनेडा।

जलसे में इस लिए एकत्र हों कि दीन के ज्ञान में उन्नति हो तथा जानकारी में वृद्धि हो ताकि ईश-ज्ञान प्रगति शील हो।

यदि आध्यात्मिकता में प्रगति नहीं तो जलसे में सम्मिलित होने का कोई लाभ नहीं।

जलसे के तीन दिन विशेष रूप से दुआओं में व्यतीत करें तथा जलसे के प्रोग्रामों को ध्यान पूर्वक सुनें।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्सिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज अल्लाह तआला की कृपा से कैनेडा की अहमदिया जमाअत का जलसा सालाना प्रारम्भ हो रहा है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हर साल दुनया की जमाअतें अपने अपने देश का जलसा सालाना आयोजित करती हैं। क्यूँ? इस लिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की अनुमति से इसको जारी फ़रमाया था और फ़रमाया कि साल में तीन दिन क़ादियान में एकत्र हों। इस लिए एकत्र न हों कि हमने कोई मेला करना है, कोई व्यर्थ की बातें करनी हैं, खेल कूद करना है, सांसारिक लाभ प्राप्त करने हैं। नहीं, बलकि इस लिए जमा हों कि दीन के ज्ञान में उन्नति हो तथा ज्ञान वर्धन हो। इस लिए जमा हों कि मअरिफ़त में प्रगति हो। मअरिफ़त क्या है? किसी चीज़ का ज्ञान होना, उसकी गहराई को जानना, यह मअरिफ़त है। आप किस मअरिफ़त में प्रगति चाहते थे? आप चाहते थे कि केवल ऊपरी रंग में इस बात की अभिव्यक्ति न हो कि हम मुसलमान हैं अथवा हम कलमा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ने वाले हैं। अपितु इस्लाम लाने के बाद अपने ईमान में उन्नति करनी है। हमने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला का रसूल माना है, ख़ातमुन्नबिय्यीन माना है तो फिर आपके आदेशों तथा आपके सुन्दर आचरण को जानने तथा उसके अनुसार कर्म करने के मार्ग खोजने हैं।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- जलसे का उद्देश्य यह है कि रूहानियत में उन्नति हो। जब मअरिफ़त प्राप्त हो जाए तो फिर केवल ज्ञान वर्धन की सीमा तक ही यह आनन्द न रहे अपितु इसको रूहानियत तथा सत्कर्मों का साधन बनना चाहिए। यदि आध्यात्मिकता में प्रगति नहीं तो जलसे में शामिल होने का लाभ नहीं है। फिर आपने फ़रमाया कि जलसे का एक लाभ यह है तथा इसके लिए प्रत्येक आने वाले को प्रयासरत् रहना चाहिए कि आपस में परिचय बढ़े तथा केवल दुनयादारों की भांति क्षणिक सम्बंध न हो बलकि प्रत्येक अहमदी की दूसरे अहमदी के साथ प्रेम और बन्धुत्व के सम्बंध में प्रगति होनी चाहिए तथा यह सम्बंध इतना दृढ़ एंव सुदृढ़ हो जाए कि कोई बात इस सम्बंध में बाधा न डाल सके, इसको न तोड़ सके। फिर आपने फ़रमाया कि तक़्वा में उन्नति करो। यह जलसे के उद्देश्यों में से बड़ा महत्त्व पूर्ण है इसके बिना एक मोमिन वास्तविक मोमिन नहीं बन सकता और तक़्वा यही है कि जो ज्ञान प्राप्त किया, जो रूहानियत का स्तर प्राप्त किया, अल्लाह तआला और उसके रसूल से जो प्रेम का सम्बंध स्थापित किया है, परस्पर सम्बंधों में जो सुन्दरता पैदा की है, उसमें अब स्थाईत्व पैदा करो, उसे यथावत् रक्खो, उसे यथावत् अपने जीवन का अंग बनाओ।

अतः ये वे बातें थीं जिसके लिए आप अलैहिस्सलाम ने जलसे का आयोजन फ़रमाया और फ़रमाया कि लोग हर साल इस उद्देश्य के लिए क़ादियान आया करें। कितने बरकत वाले जलसे होते थे वे जिनमें स्वयं हज़रत मसीह पाक अलैहिस्सलाम

शामिल होकर सीधे जमाअत को उपदेश दिया करते थे, जमाअत के लोगों का प्रशिक्षण फ़रमाया करते थे, उनकी रूहानी प्यास बुझाया करते थे।

यह तो अब सम्भव नहीं कि अहमदियों की एक बड़ी संख्या जलसे के लिए क़ादियान जाए। न ही यह सम्भव है कि जहाँ ख़लीफ़-ए-वक़्त उपस्थित है वहाँ अहमदियों की भारी संख्या जलसे में शामिल हो सके। विश्व में जिस प्रकार जमाअतें फैल रही हैं तथा उन्नति कर रही हैं, आवश्यक था कि प्रत्येक देश में जहाँ भी जमाअत है उसी रूप में जलसे आयोजित किए जाएँ जिस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में होते थे। साल में कम से कम एक बार आप अलैहिस्सलाम ने हमें अपनी अवस्थाओं में तबदीली पैदा करने के लिए प्रशिक्षण के उद्देश्य से एकत्र होने के लिए फ़रमाया था।

इस प्रकार आप भी आज यहाँ इस लिए जमा हैं कि उस उद्देश्य की पूर्ति करें जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान फ़रमाया था। प्रत्येक वर्ष आप इस कारण से एकत्र होते हैं तथा इस वर्ष विशेष रूप से आप इस लिए जमा हुए हैं कि जमाअत की स्थापना के पचास वर्ष पूरे हो गए हैं। इस साल को आप लोग, यहाँ के रहने वाले अहमदी विशेष महत्त्व दे रहे हैं परन्तु प्रत्येक अहमदी को याद रखना चाहिए कि इसका महत्त्व तो तभी होगा जब प्रत्येक अहमदी जो कैनेडा में रहता है इस बात का प्रयास करे कि हमने अहमदी होने के साथ जो बैअत का एहद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बांधा है उसे हमने पूरा करना है अन्यथा पचास वर्ष हों या इससे अधिक साल हों, इससे क्या अन्तर आता है। हम अल्लाह तआला का वास्तविक शुक्रगुज़ार बन्दा बनते हुए उसके आदेशानुसार कर्म करने वाले बनें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बैअत करते समय जो एहद किया है हम उसे पूरा करें जिसमें एक यह भी है कि मैं क़ुरआन-ए-करीम की हकूमत को पूर्णतः अपने ऊपर लागू करूँगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिस प्रकार हमारा मार्ग दर्शन किया है उसको ग्रहण करके दीन के आदेश तथा अल्लाह तआला के कलाम पर और अधिक विचार करके हम अपने मस्तिष्क को प्रकाशमयी तथा अपने ईमानों को दृढ़ कर सकते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि मैंने बार बार अपनी जमाअत को कहा है कि तुम केवल इस बैअत ही पर भरोसा न करना, इसकी वास्तविकता तक जब तक न पहुंचोगे तब तक मुक्ति नहीं। फ़रमाया- छिलके पर संतोष करने वाला मूल से वंचित रहता है। फ़रमाया कि यदि मुरीद स्वंय कर्मनिष्ठ नहीं तो पीर की बुज़ुर्गी उसे कोई लाभ नहीं देती। फ़रमाया- जब कोई वैद्य किसी को नुस्ख़ा दे तथा वह नुस्ख़ा लेकर ताक़ में रख दे तो उसे कदापि लाभ न होगा क्यूँकि उपचार तो उस पर लिखे हुए के अनुसार कार्य करने का परिणाम है। फ़रमाया- कश्ती-ए-नूह का बार बार अध्ययन करो तथा उसके अनुसार अपने आपको बनाओ और फिर फ़रमाते हैं قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا अर्थात निःसन्देह वह सफल हो गया जिसने तक़्वा में उन्नति की। फ़रमाया- यूँ तो हज़ारों चोर, व्यभिचारी, कुकर्मी, मदिरा सेवन करने वाले, पापी इत्यादि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में होने का दावा करते हैं परन्तु क्या वे वास्तव में ऐसे हैं? कदापि नहीं। उम्मती वही है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं के अनुसार कर्म करता है।

फिर एक अवसर पर बैअत के स्तर के विषय में और अधिक खोल कर फ़रमाया कि जो बैअत तथा ईमान का दावा करता है उसको टटोलना चाहिए कि क्या मैं छिलका हूँ या गिरी। याद रक्खो कि यह सच्ची बात है कि अल्लाह तआला के समक्ष गिरी के अतिरिक्त छिलके का कुछ भी मूल्य नहीं। ख़ूब याद रक्खो कि पता नहीं कि मौत किस समय आ जावे परन्तु यह पक्की बात है कि मौत अवश्य है। अतः केवल दावे पर कदापि संतोष न करो और प्रसन्न न हो जाओ, वह कदापि लाभप्रद चीज़ नहीं जब तक इंसान अपने आप पर बहुत मौतें न ले आवे तथा बहुत से परिवर्तनों तथा क्रांतियों में से होकर न निकले, वह इंसानियत के वास्तविक उद्देश्य को नहीं पा सकता। ये मौतें क्या हैं? ये दीन को दुनया पर प्राथ्मिकता देना है।

अब दुनया की हालत देखो कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो अपने कर्मों से यह दिखाया कि मेरा मरना और जीना सब कुछ अल्लाह तआला के लिए है। अतः यथार्थ मांगो, केवल नामों पर संतुष्ट न हो जाओ। कितनी लज्जा जनक बात है कि इंसान महामान्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती कहला कर काफ़िरों वाला जीवन व्यतीत करे। तुम अपने जीवन में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नमूना दिखाओ तथा वही स्थिति उत्पन्न करो।

एक बार कुछ लोग आपकी सेवा में उपस्थित हुए तथा फिर बैअत भी कर ली। बैअत के पश्चात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें कुछ उपदेश दिए। आपने फ़रमाया कि आदमी को बैअत करके केवल यही नहीं मानना चाहिए कि यह सिलसिला हक़ है और इतना मान लेने से बरकत होती है। फ़रमाया कि नेक बनो, मुत्तक़ी बनो, यह समय दुआओं में गुज़ारो। आपने फ़रमाया कि क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने ईमान के साथ सत्कर्मों को भी रक्खा है। सत्कर्म उसे कहते हैं जिसमें तनिक सा भी बिगाड़ न हो। अम्ल-ए-सालेह वह है जिसमें अत्याचार, दिखावा, बनावट, घमंड तथा मानवाधिकारों का हनन करने का विचार तक न हो। फ़रमाया कि जैसे आख़िरत में इंसान सत्कर्मों के द्वारा बचता है वैसे ही दुनया में भी सुरक्षित रहता है। यदि एक व्यक्ति भी पूरे घर में सत्कर्म करने वाला हो तो पूरा घर बचा रहता है। फ़रमाया कि कई लोग ऐसे हैं कि उनको पाप का आभास होता है तथा कुछ ऐसे हैं कि उनको पाप का आभास भी नहीं होता, इतने अभस्त हो जाते हैं वे। इसी लिए अल्लाह तआला ने सदा के लिए इस्तिग़फ़ार की व्यवस्था कराई है। अतः अत्यधिक क्षमा याचना करनी चाहिए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- और विशेष रूप से इन दिनों में जब आप दुआएँ कर रहे हों, जलसे का वातावरण ही दुआओं का है तो जहाँ दरूद पढ़ रहे हैं, वहीं इस्तिग़फ़ार भी अत्यधिक करें। फ़रमाया कि इंसान प्रत्येक पाप के लिए चाहे वह प्रत्यक्ष हो अथवा अप्रत्यक्ष हो, चाहे उसे अनुभूति हो कि न हो तथा हाथ और पाँव और ज़बान और नाक और आँख और हर प्रकार के पापों के लिए क्षमा याचना करता रहे। आजकल आदम अलैहिस्सलाम की दुआ पढ़नी चाहिए رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ कि ऐ हमारे रब्ब! हमने अपनी जानों पर जुल्म किया और यदि तू ने हमें माफ़ न किया और हम पर रहम न किया तो घाटा पाने वालों में से हो जाएँगे। मुझे यह दुआ इलहाम हुई थी कि رب كل شئ خادمك رب فاحفظنى وانصرنى وارحمنى यह दुआ भी बहुत पढ़नी चाहिए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- एक अवसर पर एक मज्लिस में हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब ने निवेदन किया कि हुज़ूर! परस्पर सहयोग एंव एकता पर भी कुछ फ़रमाएँ। इस पर आपने कुछ नसीहतें फ़रमाईं जिनका कुछ भाग मैं यहाँ बयान करता हूँ। फ़रमाया कि मैं दो ही बातें लेकर आया हूँ। प्रथम ख़ुदा की तौहीद ग्रहण करो, दूसरे आपस में प्रेम तथा सहानुभूति प्रकट करो, वह नमूना दिखलाओ कि ग़ैरों के लिए चमत्कार हो। यही दलील थी जो सहाबा में पैदा हुई थी كنتم اعداء فالف بين قلوبكم याद रक्खो दिलासा देना एक विशेषण है। याद रक्खो जब तक तुममें से प्रत्येक ऐसा न हो कि जो अपने लिए पसन्द करता है वही अपने भाई के लिए पसन्द करे वह मेरी जमाअत में से नहीं। फ़रमाया कि याद रक्खो द्वेष से दूरी मेहदी की निशानी है और क्या यह निशानी पूरी न होगी। मेरे व्यक्तित्व से इन्शाअल्लाह एक शालीन जमाअत पैदा होगी। आपस के द्वेष का कारण क्या है? कंजूसी है, अहंकार है, ख़ुद पसन्दी है। जो अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण नहीं रख सकते तथा परस्पर प्रेम एंव बन्धुत्व से नहीं रह सकते, वे याद रक्खें कि वे कुछ दिनों के मेहमान हैं। मैं किसी के कारण अपने ऊपर आरोप नहीं लेना चाहता। ऐसा व्यक्ति जो मेरी जमाअत में से होकर मेरी इच्छानुसार न हो वह शुष्क टहनी है उसको यदि बाग़ वाला काटे नहीं तो और क्या करे। शुष्क शाखा दूसरी हरी भरी शाखा के साथ रहकर पानी तो चुसती है परन्तु वह उसको हरा नहीं कर सकता बल्कि वह शाखा दूसरी को भी ले बैठती है। अतः डरो, मेरे साथ वह न रहेगा जो अपना इलाज न करे।

अतः वे लोग जो आपस में द्वेष को बढ़ाते हैं उनके लिए बड़े भय का अवसर है। जब हमने इस ज़माने में उस व्यक्ति को माना है जो हमारे सुधार के लिए आया है तो फिर हमें इसके लिए प्रयास करने की भी आवश्यकता है, उसकी बातों को भी मानने की आवश्यकता है तथा उनके अनुसार कर्म करने की भी आवश्यकता है। आपने फ़रमाया कि इंसान वास्तव में 'उन्स' से लिया गया है अर्थात जिसमें वास्तविक 'उन्स' हों, सम्बंध हों अल्लाह तआला से तथा अन्य मानव जाति से सहानुभूति, जब ये दोनों 'उन्स' उसमें पैदा हो जावें उस समय इंसान कहलाता है।

फिर इस बात की व्याख्या करते हुए कि अल्लाह तआला दुनया के काम काज तथा कारोबार से मना तो नहीं करता बल्कि आदेश देता है कि सुस्त न बैठो और काम करो परन्तु लक्ष्य सांसारिकता न हो अपितु अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति हो, यह सदैव सम्मुख रहना चाहिए। जहाँ दुनया की नेअमतों को प्राप्त करने का प्रयास हो वहाँ आख़िरत के वरदानों को प्राप्त करने का भी भरसक प्रयास करने की आवश्यकता है। इस विषय को बयान फ़रमाते हुए एक अवसर पर आपने फ़रमाया कि

अल्लाह तआला ने जो यह दुआ करने की शिक्षा दी है कि رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ इसमें भी दुनया को प्राथ्मिकता दी है परन्तु किस दुनया को حسنة الدنيا को, जो आख़िरत में वरदानों का कारण हो जावे। इस दुआ की प्रेरणा से स्पष्ट हो जाता है कि मोमिन को दुनया की प्राप्ति में حسنات الاخره का ध्यान रखना चाहिए।

फिर आप फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत में वही दाख़िल होता है जो हमारी शिक्षाओं को अपना नियम बनाता है तथा अपने साहस एंव प्रयास के अनुसार कार्य करता है। जहाँ तक हो सके अपने कर्मों को इस शिक्षा के अंतर्गत करो जो दी जाती है। कर्म, परों की भांति हैं बिना कर्मों के इंसान आध्यात्मिक स्तरों के लिए उड़ान नहीं भर सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- हमें जिस बात पर नियुक्त किया गया है वह यही है कि तक़्वा का मैदान ख़ाली पड़ा है, तक़्वा होना चाहिए। न यह कि तलवार उठाओ, यह हराम है। यदि तुम तक़्वा करने वाले होगे तो सारी दुनया तुम्हारे साथ होगी। अतः तक़्वा पैदा करो जो लोग मदिरा सेवन करते हैं अथवा जिनके धर्मों में मदिरा एक महान वस्तु है उनको तक़्वा से कोई सम्बंध नहीं हो सकता, वे लोग नेकी से जंग कर रहे हैं। अल्लाह तआला हमारी जमाअत को सामर्थ्य प्रदान करे कि वे बुराईयों से जंग करने वाले हों तथा ईशवर की नाराज़गी से बचें और पवित्रता के मैदान में प्रगति करें, यही बड़ी सफलता है तथा इससे बढ़कर कोई बात प्रभाव पूर्ण नहीं हो सकती। इस समय पूरी दुनया के धर्मों को देख लो वास्तविक उद्देश्य, ईश्वर की नाराज़गी से बचना, कहीं नहीं है तथा संसारिक प्रतिष्ठा को ख़ुदा बनाया गया है, वास्तविक ख़ुदा छिप गया है तथा सच्चे ख़ुदा का अपमान किया जाता है परन्तु अब ख़ुदा चाहता है कि वह आप ही माना जावे तथा दुनया को उसकी पहचान हो। जो लोग दुनया को ख़ुदा समझते हैं वे ख़ुदा पर भरोसा करने वाले नहीं हो सकते। फ़रमाया कि घोर प्रकोप आने वाला है, बहुत डराया है आपने, तथा वह ख़ुदा पापी और निष्ठावान में अन्तर करने वाला है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः दुनया की आज भी जो हालत है वह इस चिंता में डालने वाली है कि दुनया का परिणाम क्या होने वाला है। पिछले दिनों एक साहब कहने लगे कि दुनया बड़ी तेज़ी से विनाश की ओर जा रही है तो हमारा क्या होगा, तो इसका उत्तर तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी एक काव्य पंक्ति में भी दे दिया है कि

आग है पर आग से वे सब बचाए जाएँगे जो कि रखते हैं ख़ुदा-ए-ज़ुल अजायब से प्यार

अतः वास्तव में हम अल्लाह तआला से सम्बंधों को दृढ़ करें तथा जहाँ अल्लाह तआला के हक़ अदा करें वहीं उसके बन्दों के हक़ अदा करने वाले हों। उन वरदानों को प्राप्त करने का प्रयास करें जो ख़ुदा तआला के बताए हुए सिद्धांत के अंतर्गत वरदान हैं तथा बुराईयों से बचने का प्रयास करें, उन बुराईयों से बचने का प्रयास करें जो ख़ुदा तआला की दृष्टि में बुराईयाँ हैं, जिनको अल्लाह तआला ने खोल कर हमें क़ुरआन-ए-करीम में बयान फ़रमा दिया है। हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने के बाद आस्था एंव कर्मों की दृष्टि से, दृढ़ से दृढ़ होने का प्रयत्न करना चाहिए। यही चीज़ें हैं जो हमारी मुक्ति का कारण हैं तथा यही बातें हैं जो अल्लाह तआला को भी पसन्द हैं अन्यथा ये पचास अथवा पछत्तर साल या सौ साल, जो भी जमाअतों पर आते हैं इस क्रांति के बिना कोई चीज़ नहीं। दुनया वाले तो निःसन्देह इन बातों पर प्रसन्न होते हैं परन्तु दीनदार जमाअतें नहीं। यदि प्रसन्नता की अभिव्यक्ति इस कारण से है कि हमने ख़ुदा तआला के आदेशों के अनुसार चलने में उन्नति की है तथा भविष्य में और अधिक प्रयास करेंगे तो यह अभिव्यक्ति भी अल्लाह तआला के प्रति आभार है और उपयुक्त है परन्तु यदि हमारे क़दम हर प्रकार की नेकियों में बढ़ने के बजाए रुक गए हैं अथवा पीछे जाने लगे हैं तो यह चिंता जनक बात है। अतः हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातों को सम्मुख रखते हुए अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशानुसार कर्म करने के निरीक्षण करने की आवश्यकता है तथा यह निरीक्षण सदैव करते रहना चाहिए। जमाअत के जहाँ पछत्तर वर्ष पूरे हों तो हम कह सकें कि हमने दीन को दुनया पर प्राथ्मिकता देने का जो एहद किया था उस पर न केवल हम क़ायम हैं अपितु इसमें प्रगति करने वाले हैं। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

जलसे के तीन दिन विशेष रूप से दुआओं में व्यतीत करें तथा जलसे का जो उद्देश्य है, यहाँ के प्रोग्रामों को सुनने का , इसमें पूर्ण रूप से उपस्थित होकर इनको सुनें। अल्लाह तआला सबको इसकी भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।